

# नर तन फेर ना मिलेगो रे

नर तन फेर ना मिलेगो रे, बांधे क्यो गठड़िया प्राणी पाप की,

बड़े भाग मानुष तन पायो भटक भटक चौरासी,  
अब के दाव चूक जाए बंदे फेर पड़े गल फांसी,  
डंडा पीठ पे पड़ेगा ये , बांधे क्यो गठड़िया...

दिन ऊगे से दिन डूबे तक बेहद करे कमाई,  
छोरा छोरी की लालच में महल दिये बनवाई,  
इनमें कैसे तो रहेगो रे , बांधे क्यो गठड़िया.....

माया के मद में आकर के,रोज मचावे दंगा,  
एक दिन मरघट बीच ले जाएंगे कुटुम्ब करे तोय नंगा,  
वा दिन चौड़े में फुकेगो रे ,बांधे क्यो गठड़िया.....

देहरी तक तेरी तिरिया रोवे पोरी तक तेरी मैया,  
तेरह दिन तक याद रहेगी कहे कबीर समझैया,  
नाता यही तक रहेगो रे, बांधे क्यो गठड़िया.....

Source:

<https://www.bharattemples.com/nar-tan-pher-naa-milego-re-bandhe-kyu-gathdiyan-paraani-pap-ki/>



# Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZjyhhKzSUD-Lt9Tw>